शोध प्रारूप

स्वातंत्र्योतर मुण्डारी साहित्य: एक शास्त्रीय अध्ययन

पीएच.डी. उपाधि हेतु शोध कार्य का प्रारूप

संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा

वर्ष: 2024

शोध निर्देशक:-

डॉ0 पार्वती मुन्डू
सहायक प्राध्यापक
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची।
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:-

लेबयान मुन्डू
यु.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
स्वातंत्र्योतर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

स्वातंत्र्योतर मुण्डारी साहित्य: एक शास्त्रीय अध्ययन

भूमिका:-

भाषा के माध्यम से अपने अंतरंग की अनुभूति अभिव्यक्त करने वाली ललित कला साहित्य कहलाती है। किसी भाषा की वाचिक और लिखित (शास्त्र समूह) को साहित्य कहा जा सकता है। साहित्य को जन-मानस की उपज में पिरोना महत्वपूर्ण कथन है।

लेकिन साहित्य की भाषा की जो विविधता है उसे व्याकरणिक तथा साहित्यिक स्वरूप प्रदान करना उससे भी महत्वपूर्ण कार्य है। साहित्य न केवल मनोरंजन ही करता है वरन उसमें ज्ञान विज्ञान, इतिहास एवं कल्पना शक्ति भी होती है जिसके माध्यम से नई पीढ़ी एक दर्पण की तरह अपने इतिहास को देखता है तथा अपने आप को तौलता है। कल्पना को यथार्थ देना ही साहित्य है।

किसी भी देश का साहित्य उसके वाह्य जीवन राजनीतिक तथा आर्थिक स्थितियों का विवरण मात्र होता है, परन्तु राष्ट्र के साहित्य के इतिहास का अध्ययन उस देश के समाज के बौद्धिक आर्थिक तथा मानसिक विकास से सुपरिचित करता है। साहित्य मनोवेगों की सृष्टीकर्ता है। उसमें साहित्य का वाणी और अर्थ का वैभव समावेश होता है। समाज का उत्थान-पतन उसकी विचारधारा तथा उसकी चेतना के विकास का स्त्रोत जानने के लिए सहित्य का अध्ययन अवश्यक है। हजारो वर्ष की दबी भावनाएं अनुभूति तथा सुख-दुःख से संबंद्ध विचार श्रृंखलाएँ साहित्य के माध्यम से समझी जा सकती है।

झारखण्ड राज्य एक बुहुभाषी क्षेत्र है जहाँ एक साथ तीन भाषा परिवारों की भाषाएं बोली जाती है। प्रथम-ऑस्ट्रिक भाषा परिवार इसके अंतर्गत-मुण्डारी, संताली, हो, खड़िया भाषाएँ सम्मिलित हैं।

द्वितीय है-द्रविड़ भाषा परिवार-इसमें कुड़ुख़, माल्तो आदि भाषाएँ आती है। तृतीय है-आर्य भाषा परिवार इसके अंतर्गत-नागपुरी, पंचपरगनिया, खोरठा एवं कुरमाली भाषाएँ आती है।

ऑस्ट्रिक परिवार के अंतर्गत आस्ट्रोएशियाटिक शाखा में निकोबारी, खासी एवं मुण्डा शाखा महत्वपूर्ण है। मुण्डा शाखा में मुण्डारी भाषा आती है। जिसका क्षेत्रीय रूप-हसादअः मुण्डा, नगुरी मुण्डा, तमाड़िया मुण्डा एवं केरअः मुण्डा है।

मुण्डारी मधुर एवं कोमल प्रधान भाषा है।

संभवतः हिन्दी तथा संस्कृत से कहीं अधिक समृद्ध प्रतीत होता है। मुण्डारी भाषा की लोकप्रियता के कारण इसकी एक अलग पहचान है।

मुण्डारी झारखण्ड की प्रसिद्ध और ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। झारखण्ड में वर्तमान के दक्षिणी छोटानागपुर में निवास करने वाले आदिवासी की मातृभाषा एवं संपर्क भाषा रूप में व्यवहार की जाती है। मुण्डा प्रदेश में लोग सदियों से पुजा-पाठ एवं समाजिक, राजनीतिक सभी तरह के विषयों की मीमांसा अपनी भाषा में करते हैं। गीत, वार्ताएं, कहानियां, बुझौवल कहावतें आदि का प्रयोग अपनी ही भाषा में नितदिन हुआ करता है, इस तरह मुण्डारी भाषा आदि काल से अब तक मौखिक रूप में सुरक्षित रहती आयी है।

साहित्यिक दृष्टि से मुण्डारी साहित्य अत्यंत ही समृद्ध है। लोक साहित्य भी अत्यंत ही गरिमामयी है, जिस भाषा साहित्य की लोक साहित्य मजबुत होती है, उस भाषा की साहित्य भी अति विकसीत होती है। मुण्डारी भाषा साहित्य की शिष्ट परंपरा अत्यंत ही समृद्ध है। साहित्यक दृष्टी से मुण्डारी कवियों साहित्यकारों का योगदान अविस्मरणीय रहा है। सबों का हित सोचने और लिखने वाले इन महातओं के योगदान को समाज के सामने प्रस्तुत करना एक कल्याणकारी एवं आदर्श कार्य होगा तथा समाज के लोग लाभाविंत भी होंगें।

एक कवि वर्तमान में जीता है भूत को भोगता है, और भविष्य को चिंतन करता है। अतः अपनी मनोभाव अनुभूति, सुख-दुःख तथा अपने विवेक से संबद्ध विचार श्रृंखलाओं के माध्यम से साहित्य का निर्माण करता है। खुशहाल समाज के निर्माण में कवि अगुवाई करता है। स्वतंत्रता से पूर्व मुण्डारी, साहित्य का प्राण पथ रहा। मुण्डारी साहित्य का सृजन कम होने का मुख्य कारण है, राजाश्रय की प्राप्ति का न होना। मुण्डारी भाषा सबसे पहले ब्राह्मी लिपि, उड़िया लिपि कैथी लिपि में लिखि गई थी परन्तु अब इसका प्रमाण नहं है। अंग्रेजी शासन काल में विभिन्न मिशनरियों की स्थापना 1845 से 1915 ई0 छोटानागपुर में हो गई थी। वे जनता से अपना संपर्क स्थापित करने के लिए लोक भाषा मुण्डारी को अपनाया। इसाई मिश्नरियों द्वारा मुण्डारी लोक साहित्य का संकलन एवं प्रकाशन और इसे शुद्ध-शुद्ध समझने के लिए व्याकरण भी लिखा। पवित्र बाईबल का अनुवाद तथा कई धार्मिक पुस्तकें एवं पत्रिकाएं सर्वप्रथम निकाली गई।

1850 ई0 के आस-पास से कुछ मुण्डा विदेशी धर्म इसाई की ओर अपना कदम बढ़ाने लगे। रोमन कैथोलिक पादरी जे-हाफमैन का ''बइअंकिर' मुण्डारी व्याकरण रोमन लिपि में सबसे पहले 1871 ई0 में निकला। हॉफमैन का 1950 ई0 में इनसाइक्लोपिडिया मुण्डारिका वृहद शब्दकोश प्रकाशित हुआ। इसी तरह से विदेशी मिशनरियों के बाद यहां के इसाई मिशनरियों ने भी सबसे पहले बाईबल से संबंधित मुण्डारी भाषा में गीतों की रचना की। ऐसे रचनाओं में दाउद दयाल सिंह होरो का ''सुरूद सलुकिद दुरड' पुस्तक सन 1931 ई0 में छपा। सन 1942 में डब्लू.जी. आर्चर का मुण्डारी लोक गीतों का संग्रह ''मुण्डा दुरड' प्रकाशित हुआ। इसाई मिशनरियों ने मुण्डारी भाषा को अच्छी तरह से समझने हेतु मुण्डारी में अनेक किताबें प्रकाशित की।

प्रस्तुत शोध प्रबंध ''स्वातंत्र्योतार मुण्डारी साहित्य में जो विचारधाराएं चली जैसे-आधुनिकतावाद, गाँधीवाद, हिन्दुत्ववाद आदि को समायोजित किया जाएगा।

सन् 1947 ई0 के 15 अगस्त को जब हमारा देश अंग्रेजी हुकूमत से आजाद हुआ तब शनै-शनै राजनैतिक जागरूकता के साथ ही साथ यहं के जनजाति समाज में आर्थिक सामाजिक और बौद्धिक परिवर्तन आने लगा। जिसका व्यापक प्रभाव जनचेतना के साथ साहित्य में मुखरित हुआ। इसी सिलसिले में मुण्डारी भाषा एवं लोक साहित्य की अनेकों पुस्तकें निकली। सन 1957 ई0 में जगदीश त्रिगुणायत का ''बांसुरी बज रही' मुण्डारी लोक गीतों का संग्रह एंव धार्मिक गाथा सोसो बोंगा निकला। 1960 ई0 में श्री भइयाराम मुण्डा का ''दंडा जमाकन होड़ो कानि को' प्रकाशित हुआ। जगदीश त्रिगुणायत की सन् 1968 ई0 में ''मुण्डा लोक कथाएं' नामक पुस्तक प्रकाश में आई।

इसी तरह से 1947 से अबतक मुण्डारी साहित्य के दोनों धाराएं गद्य एवं पद्य में अनेकों रचनाएं प्रकाशित हो रही है। मुण्डारी साहित्य की व्यापक समृद्धता को देखते हुए अध्ययन सुविधा हेतु ''स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य' एक अध्ययन' शोध विषय साहित्यिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण सिद्ध होगी। साथ ही वर्तमान समाज में विद्यमान तनाव एवं निराश के भावों को मिटाकर एक नई सकारात्मक सोच का भी निर्णय करेंगी तथा मुण्डा समाज के लोगों के प्रति भाषा का आकर्षण बढ़ेगा।

मुण्डारी साहित्य के अध्येता होने के नाते मैं समझता हूं कि ''स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन' निश्चय ही एक मौलिक शोध प्रयास होगा। आजादी से लेकर अबतक मुण्डारी भाषा में कवियों ने कई रचनाएं की है। जिसमें ''मुण्डारी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन-डॉ. बी.बी.नाग, A REFERENCE GRAMMAR OF MUNDARI-OSADA TOSHIKI, ''मुंडारी शिष्ट साहित्य का अध्ययन' ' -सेलेस्टिना कंडीर, ''मुण्डारी लोक गीतों का शास्त्रीय अध्ययन' समीर नाग, ''स्वतंत्रयोतर नागपुरी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन' डॉ0 राम प्रसाद। परन्तु मुण्डारी साहित्य में स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन नहं हो पाया है। हालांकि मुण्डारी के साहित्यकार पद्य, गद्य एवं नाट्य सृजन में अनवरत लगे हुए हैं। इसके अलावा संस्मरण, रिपोर्ताज, निबंध, ललित निबंध हास्य

व्यंग्य कहानी आदि साहित्य की अनगिनत विधाओं में अपनी-अपनी रचना के साथ मुण्डारी साहित्य परंपरा को विकसित कर रहे हैं।

वर्तमान परिपेक्ष्य में इस शोध विषय का व्यापक महत्व प्रतीत होता है। मुण्डारी भाषा-भाषी और इस भाषा के साहित्यकारों से इतार अन्य लोग भी मुण्डारी साहित्य की विशिष्टता और इसकी श्रेष्ठता को जान सकेंगें तथा साहित्य के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कर इसकी महता का मूल्यांकन कर सकेंगें।

शोध विषय की प्रेरणा:-

झारखण्ड मेरी जन्म भूमि है और मेरी मातृभाषा मुण्डारी होने के कारण बाल्यावस्था से ही मुण्डारी भाषा के प्रति काफी लगाव रहा है। स्नातक एंव स्वतंत्रयोतर में मुण्डारी भाषा से अध्ययन करने के बाद मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि मैं भी भाषा विषय को लेकर कुछ कार्य करूंगा जिससे मुझमें जो अज्ञानता है उसे ज्ञात कर सकूं और इसमें मेरी उन्नति हो तथा मुण्डारी भाषा साहित्य एंव कला संस्कृति और अधिक समृद्ध एवं विस्तृत हो सके।

मैं बचपन से ही अपने परिवार में दादा-दादी, माता-पिता एवं अन्य प्रियजनों से कहानी, चुटकुले एवं गीत-संगीत को सुनते आ रहा हँ। मुझे कहानी, चुटकुले एंव अन्य कला संस्कृति जो मेरे समाज में चलते आ रही है बहुत पसंद है। बडे होने पर मुण्डारी विषय पढ़ाई करना प्रारंभ किया इस दौरान मुझे पुराने एवं नये कहानियों, कविताओं, उपन्यास, निबंध आदि विभिन्न साहित्यकारों लेखकां एवं कवियों के विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया और इन्हीं पुस्तकों के माध्यम से मुझे मुण्डा आदिवासियों की विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई जो जीवन के प्रत्येक पहलुओं पर आधारित अपनी विशेषता को प्रकाश डालती है। जैसे-सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, भाषा साहित्य एवं कला संस्कृति पर अपने क्षेत्र में अपनी अलग छवि बनाती है जो पिछले कई पीढ़ियों से अपनी रचना द्वारा मुण्डारी साहित्य को अलोकित करते जा रही है।

विषय वस्तु:-

मुण्डारी शिष्ट साहित्य समृद्ध है। इसके संकलन कार्य हुए है और हो रही है परन्तु ''स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्यः एक शास्त्रीय अध्ययन' मुण्डारी भाषा-भाषियों एवं मुण्डारी साहित्य के प्रेमियों को सहजता से उपलब्ध नहीं हो पाता। मुण्डारी साहित्यकार मुण्डारी साहित्य के सृजन में लगे हुए हैं। काव्य में गीत, कविता, खण्ड काव्य, महाकाव्य स्फूट काव्य एवं आधुनिक काव्य विधाएं भी रची गई है, इसी तरह से मुण्डारी उपन्यास, कहानी, निबंध, एकांकी आदि प्रभूत लिखे गए है और लिखे जा रहे है।

परिकल्पना:

'स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन' को मैने शोध कार्य के लिए विषय चुना है इसे विषय बनाने के पीछे मेरा पूर्व कल्पना आजादी के बाद मुण्डारी साहित्य का जो क्रमिक विकास हुआ है, गद्य-पद्य की नई धारा का सूत्रपात हुआ है, मुण्डारी साहित्य में आधुनिकता का सुत्रपात, साहित्य के विविध आयामों का निष्कर्षण आदि पक्षों को समझा जाएगा।

''स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य: एक शास्त्रीय अध्ययन में वर्तमान परिदृश्य में लिखित एवं अलिखित प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष ऐतिहासिक तथ्य समाहित हैं। इन तथ्यों का मापदण्ड तैयार करके बिखरे हुए रूपों का निर्धारण किया जाएगा। लेखकों के भावपक्ष एवं कला पक्ष को समझा जाएगा जीवन की हर्ष विषाद कर्म के प्रति तनमयता, निष्ठा, समर्पण, अध्यात्म, रहस्यवाद आदि भावों का साहित्यिक दृष्टि से निर्धारण किया जाएगा। प्रस्तुत शोध कार्य से मुण्डारी भाषा साहित्य के साहित्यकारों, अध्येताओं के प्रति श्रद्धा भाव एवं कला सृजन में नए आयाम को प्राप्त करेगा।

उद्देश्य:-

1. मुण्डारी साहित्य का गहन अध्ययन करना।

2. मुण्डारी साहित्य के विविध पक्षों को उजागर करना।

3. मुण्डारी साहित्य के विकास पर प्रकाश डालना।

4. मुण्डारी साहित्य एवं मुण्डा जनजाति के मध्य एक साहित्यिक समांजस्य स्थापित करना।

5. स्वातंत्रता पश्चात मुण्डारी साहित्य को प्रकाश में लाना।

6. मुण्डारी गद्य साहित्य एवं पद्य साहित्य, कवि, लेखकों, साहित्यकारों के विचार को प्रकाश में लाना।

7. मुण्डारी भाषा साहित्य की भावधारा को प्रकाश में लाना।

8. साहित्य के प्रति समर्पण की भावना को प्रस्तुत करना।

शोध विधि:-

किसी भी शोध कार्य की विधि वैज्ञानिक होती है, यह वास्तविक तथ्यों पर आधारित याथार्थ व निश्चित निष्कर्ष पर होता है, इस प्रकार यह स्पष्ट होता है, कि शोध कार्य के बुनियादी शर्त अध्ययन विषय से संबंधित वास्तविक तथ्यों की संकलन है। वास्तविक तथ्यों को काल्पनिक ढंग से एकत्रित नहीं किया जा सकता है। इसके लिए तो कुछ प्रमाण सिद्ध तरीका होना आवश्यक है। चूंकि चयनित विषय स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन' जो कि साहित्यिक परक शोध कार्य है। इसमें मुण्डारी गद्य एवं पद्य साहित्यिक पहलुओं का विश्लेषण करना है। प्रस्तावित शोध कार्य को तर्कसंगत पूर्ण करने के लिए कुछ शोध विधि एवं प्रविधि का उपयोग आवश्यक है। इस कारण इस शोध कार्य का आधार विश्वसनीय तथा सूचनाएँ, आंकडों आदि को एकत्र करने एवं उसे प्रस्तुत करने की कुछ विधियां है। जैसे -

1. अवलोकन विधि

2. साक्षात्कार विधि

3. विश्लेषणात्मक विधि

4. तुलनात्मक विधि

5. प्रश्नावली

6. आलोचनात्मक विधि

शोध उपकरण:-

प्रस्तावित शोध विषय ''स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन' के लिए निम्नलिखित सामग्री शोध कार्य के लिय उपयोग किए जा सकते है:-

1. शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएं, संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।

2. पत्र-पत्रिकाएं - गोतिया, जोहार आदिवासी, नागपुरी, जय झारखण्ड, आदिवासी सकम, झारखण्ड समाचार शंखनाद, पझरा, कला संगम, जोहार सहिया, अखडा आदि।

3. टेप रिकॉर्डर (साक्षात्कार हेतु जरूरी)

4. कैमरा (अवश्यक चित्रों को एकत्रित करने, फोटो खिंचने एवं विडियो तैयार करने के लिए)

5. मोबाईल

6. कम्प्यूटर

7. इंटरनेट

8. नक्शा, पेपर, कलम, पैंसिल आदि।

शोध का क्षेत्र:-

प्रस्तावित शोध कार्य “स्वतंत्रयोतर मुण्डारी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन’ पर केन्द्रीत है। अतः इस शोध कार्य का क्षेत्र यानी की विषय सीमा मुण्डारी साहित्य समृद्धि तक सीमित होगी।

शोध का समाज में प्रभाव:

मुण्डारी साहित्य मुण्डाओं का प्रतिबिंब है। मुण्डा समाज की स्थिति का आंकलन इससे हो सकेगा। साथ ही साथ मुण्डारी भाषा साहित्य की स्थिति पर भी प्रकाश डालेगा। समाज की वर्तमान उन्नति अवनति के दिग्दर्शन से समाजिक निर्माण में सहयता मिल सकेगी।

अध्यायीकरण

प्रस्तावना:-

शोध की परिकल्पना

शोध कार्य का उद्देश्य

शोध का महत्व

शोध विधि

पूर्व शोध कार्यो का विवरण

प्रथम अध्ययन

स्वतंत्रता पूर्व मुण्डारी साहित्य का परिचय

1.1 गद्य साहित्य

1.2 पद्य साहित्य

1.3 चम्पू साहित्य

द्वितीय अध्याय

स्वतंत्रयोतर मुण्डारी पद्य साहित्य

2.1 महाकाव्य

2.2 खण्डकाव्य

2.3 स्फुट कविताएँ

2.4 स्फुट गीत

तृतीय अध्याय -

स्वातंत्र्योतर मुण्डारी गद्य साहित्य

3.1 कहानी

3.2 उपन्यास

3.3 निबंध

3.4 जीवनी

3.5 अत्मकथा

3.6 अनुवाद साहित्य

चतुर्थ अध्याय

स्वातंत्र्योतर मुण्डारी नाटय साहित्य

4.1 नाट्य साहित्य का उदभव

4.2 प्रमुख नाटक

4.3 मंचीय नाटक

4.4 एकांकी नाटक

पंचम अध्याय

स्वातंत्र्योतर मुण्डारी पत्र-पत्रिकाएं एंव संचार माध्यम

5.1 आदिवासी

5.2 उलगुलान

5.3 संगोम

5.4 एयोन

5.5 बा-गनालङ

5.6 सेंड़ा सेतेङ

5.7 सनङ

5.8 सम्पड़तिङ

5.9 जगर सड़ा

षष्ठम अध्याय

स्वातंत्र्योतर मुण्डारी व्याकरण

6.1 मुण्डारी भाषा व्याकरण एंव साहित्य-डॉ0 वीरेन्द्र कुमार सोय

6.2 नवा होड़ो जगर मुंडि-डॉ0 मनसिद्ध बड़ायऊद

6.3 होड़ो जगहर मुंडि-निर्मल सोय

6.4 बड़अङकिर-निकोदीम करेकेट्टा

6.5 मुण्डारी व्याकरण-डॉ0 रामदयाल मुण्डा

6.6 मुण्डारी बेयाकरण-डॉ0 सिकरादास तिर्की

सप्तम अध्याय -

स्वातंत्रयोतर मुण्डारी शब्दकोश

7.1 होड़ो कजि पुथि-निर्मल सोय

7.2 मुण्डारी हिन्दी शब्दकोष-श्रीमति स्वर्णलता प्रसाद

7.3 मुण्डारी टुङको ढारि-डॉ0 मनमसीह मुण्डू

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रंथो की सूची

संदर्भ ग्रंथो की सूची

पत्र-पत्रिकाओं की सूची

साक्षात्कार सूची

चित्रावली

नोट:- आवश्यकतानुसार प्रस्तावित शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक:-

डॉ0 पार्वती मुन्डू
सहायक प्राध्यापक
जगन्नाथ नगर महाविद्यालय, धुर्वा, राँची।
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी:-

लेबयान मुन्डू
यु.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ.
स्वातंत्र्योतर मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथ:-

1. ओड़ेया, मेनस, मथुराअः कहानि, 1984, 1986, 1988, 1989, काथलिक प्रेस, राँची

2. काण्डे, काशीनाथ सिंह मुण्डा, ससं-बा, 1972 मुक्ति प्रिंटिंग प्रेस, कोकर, राँची

3. कुमार, अनिल, झारखण्ड मंे मुण्डाओं का आर्थिक इतिहास, 2002, जानकी प्रकाशन, पटना, बिहार

4. केरकेट्टा निकोदिम, कुदुम, 1995, रश्मि प्रिंटिंग प्रेस, हिनू, राँची

5. गणेशन डॉ. एस.एन. अनुसंधान प्रविधि सिद्धांत और प्रक्रिया, 2023, लोक भारती प्रकाशन, पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग महात्मा गाँधी मार्ग, प्रयागराज, नयी दिल्ली

6. तिर्की सिकरादास, मुण्डारी लोकसाहित्य में ऐतिहासिक तथ्य, 2012, राँची, पृथ्वी 126, विद्या बिहार रोहतक रोड, नयी दिल्ली

7. तिवारी, भोलानाथ, भाषा विज्ञान, 2007, किताब महल, 22-ए0, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहाबाद

8. तोपनो सेम, कुर्सीनामा मुण्डाओं का नृजाति इतिहास, 1982, भारतीय मानव विज्ञान, सर्वेक्षण जवाहर लाल नेहरू मार्ग, कलकता

9. पाहन, मान सिंह, डोम्बारी बुरू, 2020, पृथ्वी प्रकाशन, रोहतक रोड, न्यू दिल्ली

10. बड़ायऊद डॉ0 मनसिद्ध, होड़ो जगर गअःइदि-गमुइदि जमा, 2011, काथलिक प्रेस, राँची

11. बड़ायउद डॉ0 मनसिद्ध, होडो जगर गअः इदि गमुइदि, 2011, काथलिक प्रेस, राँची।

12. बडिङ सुलेमान, नइमिअः किमिनते (रूत), 1970, राँची, एडुकेशन प्रेस, राँची

23. मुण्डा, दुलयचन्द्र, सुड़ा सगेन, 1966, अधीक्षक सचिवालय मुद्रणालय, बिहार, राँची

6. मुण्डा काशीनाथ सिंह, गुड़राम, 1980, आई0डी0 पब्लिकेशन, कोकर, राँची

7. मुण्डा मंगल सिंह, रंगा चौडल रेन पुतुल 2011, झारखण्ड झरोखा, राँची

8. मुण्डू डॉ0 मनमसीह, कुदुम ओडो: सोलको, 1980, कथलिक प्रेस, राँची

9. मुण्डा दुलयचन्द्र, बम्बारू, 1978, नोवाल्टी आर्ट प्रेस मने रोड, राँची

10. मुण्डा कण्डे कशिनाथ सिंह, ससं-बा, 1988, आई0डी0 पब्लिकेशन, कोकर, राँची

11. मुण्डा डॉ0 रामदयाल, हिसिर, 1972, आई0डी0 पब्लिकेशन, कोकर, राँची

12. मुण्डा डॉ0 रामदयाल, सेलेद, 2005, आई0डी0 पब्लिकेशन, कोकर, राँची

13. मुण्डा डॉ0 रामदयाल, मुण्डारी पाठ, 1981 आई0डी0 पब्लिकेशन, कोकर, राँची

14. मुण्डा, रामदयाल, आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता के सवाल, 2002, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली

15. मुण्डा रामदयाल व रतन सिंह मानकी, आदि धरम, 2009, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

16. मुण्डा, सोमा सिंह, मोनोग्राफी, 2008, झारखण्ड जनजातीय शोध संस्थान, राँची।

17. मुण्डा, दुलयचन्द्र, बम्बरू, 1978, नॉवल्टी आर्ट प्रेस, मेन रोड, राँची

18. मुण्डा, डॉ0 रामदयाल, ए' आ नावा कानिको, 2013, द्वितीय संस्करण, आई0डी0 पब्लिकेशन, कोकर, राँची

19. मुण्डा, डॉ0 रामदयाल, मुण्डारी पाठ, 2013, द्वितीय संस्करण, आई0डी0 पब्लिकेशन, कोकर, राँची

20. मुण्डा डॉ0 रामदयाल, मुण्डारी गीतकार श्री बुदुबाबु और उनकी रचनाएँ प्रीतपाला और रामायण पाला, 1974, नॉवल्टी प्रेस, मेन रोड, राँची

21. नोतरोत डॉ0 अल्फ्रेड, मुण्डारी बाईबल, 1911, दा बाईबल सोसाइटी ऑफ इंडिया, 206 महात्मा गाँधी रोड, बैंग्लोर

22. रॉय एस0सी0, मुण्डा एण्ड देयर कंट्री, 2002, एशिया पब्लिशिंग हॉउस, कलकता।

23. लकड़ विसु, सरना संगीत, 1987, सुदर्शन प्रेस, चर्च रोड, राँची।

24. होरो दाऊद दयाल- सुरूद सलुकिद-1931, डेयोकीस प्रेस, राँची

25. त्रिगुणायत, जगदीश, मुण्डा लोककथाएँ, प्रथम संस्करण, 1968, अधीक्षक सचिवालय शाखा, मुद्रणालय, बिहार राँची

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. केरकेट्टा निकोदिम, बड़अंकिर, 1981, छोटानागपुर डियोकीस प्रेस, राँची,

2. प्रसाद स्वर्णलता, मुण्डारी हिन्दी शब्दकोश, 1973, अधीक्षक सचिवालय मुद्रणालय, बिहार, राँची

3. बड़ायउद डॉ0 मनसिद्ध, नवा होड़ो जगर मुंडि, 2005, काथलिक प्रेस, राँची

4. बड़ायऊद डॉ0 मानसिद्ध, जोनोका कजिको ओड़ोः कजि रअः जुगुतु को, 1987, झारखण्ड पब्लिकेशन, मेन रोड, राँची

5. बड़ायऊद डॉ0 मानसिद्ध, होड़ो जगर सड़ति ओड़ोः सड़ति ओलहरियाको, 2018, जेवियर पब्लिकेशन्स कर्बला टैंक रोड, राँची

6. बड़ायऊद डॉ0 मानसिद्ध, मुण्डा कोअः सोना काजिको, 2010, काथलिक प्रेस, राँची

7. मुण्डू डॉ0 मनमसीह, मुण्डारी टुङकोढारि, 1995, रशिम प्रिंटिंग प्रेस, हिनू, राँची

8. मुण्डा, डॉ0 रामदयाल, मुण्डारी व्याकरण, 1988, छोटानागपुर प्रकाशन, केन्द्र, राँची।

9. मुण्डा, मंगल सिंह, छैला सन्दु, 2004, राजकमल प्रकाशन, प्रा0 लि0 1-बी0, नेताजी सुभाषा मार्ग, नई दिल्ली।

10. मुण्डू डॉ मनमसीह, मुण्डारी संक्षिप्त व्याकरण, 1979, काथलिक प्रेस, राँची

11. सोय, डॉ0 बीरेन्द्र कुमार मुण्डा, मुण्डारी जगर ओड़ोः सहिति रेआ उबर, 2016, प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली

12. समाद लुस्कु, नेलेम दस्तुर, 2007, अनीता प्रिंट्स, जमशेदपुर

13. हॉफमैन फा0 जे0 वी, इनसाइक्लोपीडिया मुण्डारिका, 1930-1979, सुपरिटेंडेंट गर्वेमेंट प्रिंटिंग प्रेस, बिहार, पटना

पत्र पत्रिकाओं की सूची

1. आदिवासी, बिहार सरकार, राँची, फरवरी 1947

2. उलगुलान (त्रेमासिक) सं0 मुण्डा डॉ0 सत्यनारायण, कैलाश प्रेस, राँची, 2003

3. जागर साड़ा (मासिक पत्रिका), सुशील कुमार बे, 15 अक्टूबर, 1950

4. बा-गानालङ (वार्षिक पत्रिका) सं0 अनुज, डॉ0 भुनेश्वर, टेटे वंदना, भइयाराम मुण्डा फाउण्डेशन, निवारण आश्रम निवारपुर राँची, नॉवल्टी आर्ट प्रेस, राँची

5. मरसल (मासिक पत्रिका) निरल एनेक होरो राँची, सितम्बर 1993

6. सरना सकम (मासिक पत्रिका) भइयाराम मुण्डा, 1960

7. सम्पड़तिङ (मासिक) सं0 हंस डॉ0 एस0ए0बी0डी0 राँची, जून 1969

8. सेंडा सेतङ (त्रेमासिक) सं. मुण्डू नवीन राँची, 1999

9. संगोम (त्रेमासिक साहित्यिक पत्रिका) सोय डॉ0 विरेन्द्र कुमार, राँची 2010